International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में अभिव्यक्त संवेदना

सुदेश देवी
विस्तार व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय, बावल, रेवाड़ी (हरियाणा)

'नासिरा शर्मा' के उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' को पढ़ने के बाद मेरे मन–मस्तिष्क में एक बात बिजली की मानिदं कोधती रही कि यह उपन्यास 1947 के बंटवारे की सच्चाई को उद्घटित करता है, वो भी पूरी जीवन्तता से बंटवारा चाहे घर का हो या देश का सच्चाई ये रही है कि कोई भी खुशी प्राप्त नहीं कर सकता। उसी तरह 'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास भी पात्रों के जीवन की एक घुटन, पीड़ा और दर्द का चित्रण है।

'जिन्दा मुहावरे' जीते जागते दर्द का एक दरिया है, यह गुजरे हुए समय की वेदना की भूली–बिसरी टीस नहीं ..... दर्द की शुरूआत है, जो 1947 से शुरू हुई वह आज तक रूकने का नाम नहीं ले रही है, बल्कि दिनों–दिन बढ़ती चली जा रही है। लेखिका 'नासिरा शर्मा' के चिन्तनशील मस्तिष्क और संवेदनशील दिल की एक–एक परत ने उस दर्द, पीड़ा और झटपटाहट को अपने दिल के अन्दर महसूस किया और उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में संवेदना, घुटन, छटपटाहट, पारिवारिक, धार्मिक और आतंकवाद आदि अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुई है।

1 पारिवारिक रूप में अभिव्यक्त संवेदना

मैंने 'नासिरा शर्मा' के उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में अभिव्यक्त संवेदना का क्रमानुसार अध्ययन किया है। जहाँ तक सामाजिक संदर्भ में अभिव्यक्त संवेदना है, तो परिवार समाज की प्रथम इकाई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जब भी किसी मनुष्य के साथ कोई अच्छी या बुरी घटना घटित होती है तो सबसे पहले उसका

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

परिवार प्रभावित होता है, समाज नहीं। परिवार में भी परिवार का मुखिया सबसे पहला संवेदनशील होता है।

लेखिका 'नासिरा शर्मा' ने अपने 'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास में एक मुस्लिम परिवार रहीमउद्दीन के छोटे से परिवार की दुःख भरी कहानी को अपनी कलम से लिखा है। यह कहानी एक परिवार की नहीं, ऐसे करोड़ों परिवारों की है, जो इस बंटवारे अथवा हादसे का शिकार हुए थे। रहीमउद्दीन फैजाबाद के एक गांव में खेतीबाड़ी कर घर–परिवार को हंसी–खुशी चलाता था। यह पात्र भारत देश के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके परिवार का विभाजन देश के विभाजन के साथ ही हुआ था। क्योंकि उसका बड़ा बेटा इमाम भारत में तथा दूसरा निजाम पाकिस्तान में रहने का निर्णय करता है। निजाम जिस पाकिस्तान को अपना वतन समझकर रहने के लिए जाता है, उसे वहां भी चैन नसीब नहीं होता। वह स्वयं को अकेला और बेसहारा महसूस करता है। उसे हर समय माँ–बाप, भाई–भावज, बहन, भतीजे व सगे–संबंधियों की यादें तड़पाती है।

एक बात रहीमउद्दीन को हमेशा दुःखी और चिन्तित करती है कि जो भारत उनकी जन्मभूमि है, जिससे वह अत्यन्त प्रेम करता है और विभाजन के समय भी जो लोग भारत छोड़कर नहीं गये, आज उन्हें अपनी जन्मभूमि पर क्यों मारा जा रहा है। उन्हें दृष्टि से क्यों देखा जाता है।

रहीमउद्दीन को हर वक्त निजाम का इंतजार रहता है, मानो वह हँसना तो भूल ही गया हो वह कहता है कि –

''माँ–बाप का गुस्सा बेल्वा, असल मे पानी का बुलबुला होता है, फिर अब हम मौत की दहलीज पर खड़े होकर कौन–सा हिसाब निपटाएँ ? थके से रहीमन कह उठें'' इस प्रकार से 'जिन्दा मुहावरे' में एक पिता की पीड़ा, दर्द व वेदना का मार्मिक चित्रण हुआ है कि किस प्रकार एक पिता अपने बेटे के गम में घुट–घुट कर मर जाता है।[1]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

इसी प्रकार परिवार की सबसे संवेदनशील कड़ी माता की स्थिति का भी वर्णन 'नासिरा शर्मा' ने अपने उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में किया है। परिवार में माँ सबसे संवेदनशील होती है। कोई भी माँ अपने बच्चों से अलग होकर नहीं रह सकती। 'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास में भी निज़ाम की अम्मा उसके पाकिस्तान चले जाने पर दिन –रात उसे याद करके रोती रहती ? इस प्रकार अम्मा की आँखों में हर वक्त अपने बेटे से मिलने की तड़प रहती वह निजाम को याद कर कहती :–

''ऐसे कउन से लाल–जवाहर टके है
हुआ, जो हम सबको छोड़ गवा नन्हे ?''[2]

निजाम के गाम में अम्मा जो बीमार होकर सिर्फ हड्डियों का ढ़ाँचा रह गई थी, शरीर का रोग हो तो डॉक्टर, वैद्य ठीक भी करे, मगर आत्मा की बीमारी का इलाज तो उनके पास नहीं है। अतः वह अपने दिल के टुकड़े को याद करती रहती इसी दुःख में उसकी आँखे हमेशा के लिए बन्द हो गई।

इस प्रकार 'जिन्दा मुहावरे' में जहाँ माता–पिता की संवेदना अभिव्यक्त हुई है वही निजाम का भाई इमाम भी दुःखी और बेचैन है निजाम को पाकिस्तान जाने से रोकने के लिए निजाम की चाची शमीमा उसे समझाते हुए कहती है कि –

''जाओ भैया तुम्हें बहुत गुमान है न मगर याद रखे एक दिन बिलाई भी सूंघत–सूंघत अपने पुराने ठिकाने को लौटता है, चाहे बोरा में भर कोसों दूर छोड़ के आओ, तुम तो भला इन्सान ठहरें।''[3]

इस प्रकार से नासिरा शर्मा के उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में जिस प्रकार माता–पिता, भाई–भावज की संवेदना का वर्णन किया है, उसी प्रकार निजाम की बहन, भतीजा व मंगेतर भी उसके पाकिस्तान चले जाने के गम में दुःखी है। उन्हें हर वक्त निजाम का इन्तकाल है।

अतः हम कह सकते हैं कि 'नासिरा शर्मा' जी ने अपने उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में पारिवारिक संवेदना और सगे सम्बन्धियों की संवेदना का क्रमानुसार चित्रण किया है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

2 घुटन व पीड़ा के रूप में

'नासिरा शर्मा' ने अपने उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में जहाँ पारिवारिक संवेदना का मार्मिक चित्रण किया है, वही दूसरी तरफ परिवार के सदस्यों की घुटन, पीड़ा, वेदना का भी वर्णन किया है। 'जिन्दा मुहावरे' में उस मुस्लिम पीढ़ी की भावनाओं को उकेरा गया है, जिसमें भारत–पाक विभाजन के कारण अपना सारा जीवन शंकाओ और दुविधाओं में बिता दिया। देश का विभाजन होने पर भारतीय मुस्लिम वर्ग यह निर्णय नहीं कर पाता कि उसे भारत में रहना चाहिए या पाकिस्तान में। जो लोग भारत छोड़कर पाकिस्तान चले गए वे समझ न सके कि उनका निर्णय उचित था अथवा नहीं।

1947 के उपद्रव बहुत भयंकर थे, जिन्हें याद करके दिल सिहर उठता है अपने घरों से अपने समाज जिसमें पैदा होकर बड़े हुए है, उसके उखड़ने का दर्द 'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास में साफ झलकता है। बंटवारे ने घर, आंगन, जमीन, जायदाद तथा परिवारों को भी बांट दिया था। ये दंगे फसाद इतने भंयकर थे कि मां–बेटी से बेटी–मां से भाई–बहन से, कहीं भाई–भाई से, बेटा–बाप से तो प्रेमी–प्रेमिका से जुदा हो गए। कितने दिलों में एक–दूसरे से बिछुड़ने का दर्द था। इस पीड़ा, दुःख, दर्द व घुटन को वही समझ सकते थे, जो इस हादसे के शिकार हुए थे। 'नासिरा शर्मा' ने रहीमउद्दीन, शमीमा, इमाम, अम्मा, सुगरा, रज्जो की बिलखती टूटती आहों में करोड़ो, परिवारों की दिल खराश वेदना को सुना, जो 'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास में दिखाई देती है।

निजाम ने भले ही पाकिस्तान जाकर नाम व दाम दोनों कमाये हो, लेकिन अपने परिवार को खोने का दर्द तो वह नहीं भुला सकता, यह दर्द उसके हृदय में हमेशा कांटे की तरह चुभता रहता है। वह जिन्दा लाश बन कर रह जाता है और परिवार की याद उसे तड़पाती रहती।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

3 स्वार्थी राजनेताओं के रूप में

'नासिरा शर्मा' ने 'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास में उस दास्तान को उद्धरत किया है, जिसमें देश आजाद तो हो गया, परन्तु वह अपने को विखंडित होने से नहीं बचा सका। भारत को दो भागों में बांटने में हमारे स्वार्थी राजनेताओं का बहुत बड़ा हाथ रहा है। जो आज भी अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए देश में दंगे करवाते है। बंटवारे के समय हुए दंगे–फसादों ने न जाने कितने ही बेगुनाहों को मौत के घाट उतार दिया, कितने ही मुसलमान बेघर हो गए। लोगों के घरों को जला दिया गया, बच्चे व औरतों को बेरहमी से मार दिया गया।

जो मुसलमान अपनी जान बचाकर पाकिस्तान चले गए वहाँ भी वे अनजान, अकेले, अपनों की यादों में तड़पते इधर–उधर भटकते रहे और ये यादें उनके मन मस्तिष्क में तब तक जिन्दा रहेगी जब तक पाकिस्तान की यह पीड़ा जिन्दा है। जिन्होंने इस त्रासदी को अपनी आँखों से देखा है और सहा है। उनकी यादों में हिन्दुस्तान एक खुशनुमा बाग की तरह जिन्दा है। इस प्रकार नेताओं ने अपना स्वार्थ पूरा किया, परन्तु दोनों देशों की जनता ने बहुत दुःख सहन करना पड़ा। स्वार्थी राजनेताओं की चाल मासूम लोगों पर बिजली बन कर गिरी। हिन्दुस्तान से पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों से कहा जाता, यह वतन तुम्हारा नहीं है, तुम अपने देश हिन्दुस्तान जाओ। जिस पाकिस्तान को अपना देश समझकर रहने के लिए गए वहां उन्हें गज जमीन भी नसीब नहीं हुई। इस प्रकार वे कटी–पतंग बनकर फड़फड़ाते रहे।

इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में उन मुस्लिम परिवारों की वेदना को दर्शाया है, जो पाकिस्तान जाकर बस गये और उनका कुछ परिवार हिन्दुस्तान में रह गया। अपनों से बिछुड़ने का दुःख, दर्द उन्हें दिन–रात तड़पाता रहा। इस बंटवारे के लिए स्वार्थी राजनेता ही उत्तरदायी है। इन नेताओं ने हिन्दु–मुसलमानों दोनों समुदाय में कटुता के बीज–बोकर उन्हें आपस में लड़ने पर मजबूर कर दिया। इस प्रकार बहुत खून–खराबा हुआ और बहुत से मुसलमान हिन्दुस्तान छोड़कर

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

पाकिस्तान जाकर रहने लगे। इस प्रकार भारतीय मुसलमान दोनों जगह ही दुःखी और परेशान है –

''तकलीफदेह सच्चाई यह हें भारत का मुसलमान दोनों जगह परेशान है – सरहद के इस पार भी और उस पार भी, और इस परेशानी का कारण राजनीति का भद्दा चेहरा है। आजादी के वक्त जो लकीर खींची गयी थी धरती के सीने पर वह अब चौड़ी खाई बन चुकी है।''[4]

इस प्रकार से बंटवारा एक अभिशाप है, एक कोढ है, एक जहर है, आग है, जिसमें आज भी दिल जल रहे है। यह बंटवारा ही है जिसमें दोनों कौमों (हिन्दू–मुस्लिम) के बीच शंका, संदेह, अविश्वास के काँटे बो दिए है।

4 आतंकवाद के रूप में

'नासिरा शर्मा' द्वारा रचित उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में संवेदना अनेक रूपों में व्यक्त हुई है, 1965 और 1971 में भारत–पाक युद्ध क्या हुआ ? हिन्दू–मुसलमान दोनों एक–दूसरे के दुश्मन बन गये है। मनुष्यों के दिलों से मानवता समाप्त हो गई है। आज मानवता को भी कत्ल करने की साजिशें रची जाती है। आज भी चैन–अमन नहीं है, खौफ और आतंक के साये में जीना आज के मनुष्य की तकदीर बन चुकी है। बम ब्लास्ट आम बात बन चुकी है, किसी पल, किसी जगह जिन्दगी सुरक्षित नहीं है। इस प्रकार जब–जब देश में दंगे होते है आपस में तनाव के कांटे उगते है, आतंक की अग्नि में निरीह लोग सिकते है, भुनते है तो मानवता खून के आंसू बहाती है। आखिर कब तक यह सिलसिला जारी रहेगा ? आज भी 'जिन्दा मुहावरे' जैसी स्थितियों को लोग जीने के लिए अभिशप्त है। अगर हिन्दुस्तान में कहीं कोई घटना घटती है, तो निशाने पर पाकिस्तान आ जाता है, पाकिस्तान में दंगे होते है, बम ब्लास्ट होता है तो उगली हिन्दुस्तान पर उठती है। बंटवारा खुली तलवार की तरह दोनों के सिरों पर लटका हुआ है। लहु–लूहान होते रहते है, आम मासूम लोग जिनका राजनीति से कोई लेना–देना नहीं है। आज भी स्थिति यह बनी हुई है कि इन्सानियत के दुश्मनों द्वारा

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

ताज होटल, ओबराय होटल और पठानकोट में किए बम ब्लास्ट में न जाने कितने ही बेगुनाह लोग मारे गये। आखिर इन बेगुनाहों को क्यों निशाना बनाया गया ? क्यों आदमी, आदमी का दुश्मन बना हुआ है ? किसका खौफनाक चेहरा छिपा है। नकाब में? जो फसाद करवाते है ? भाई को भाई का दुश्मन बनाते है ? क्या इनके अन्दर इन्सानियत नहीं है ?

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बंटवारे के समय सीमा पर लकीरे खीचीं गई थी उन्होंने आज खाई का रूप ले लिया है। आजादी के समय जो दुर्भावनापन एक–दूसरे के दिलों में बैठ गई थी उसमें कमी न आकर आज उग्र रूप धारण कर लिया है। अतः चारों ओर आतंक छाया हुआ था। काश, कोई दिन ऐसा आये, कोई सूरजं ऐसा निकले कि दोनों को अहसास हो कि सरहदों का नामो–निशान मिटा दिया जाए। हिन्दुस्तान नहीं, पाकिस्तान नहीं, दुनिया के नक्शे पर एक नाम उभरे, हिन्द पाक।

5 धार्मिक रूप में

'नासिरा शर्मा' के उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में संवेदना धार्मिक रूप में भी अभिव्यक्त हुई है। धर्म के कारण हिन्दू–मुस्लिम एक–दूसरे के खून के प्यासे बन गए। 1992 में लिखा गया उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' बंटवारे के समय से चली आ रही दुःख भरी वेदना है जिसकी पुकार आज भी सुनाई देती है। हिन्दुस्तान पाकिस्तान देश का बंटवारा न होकर दो धर्मो और जातियों का बंटवारा बन गया है। दोनों एक–दूसरे के खून के प्यासे बन गए है। यह दुश्मनी बंटवारे के समय शुरू हुई और आज तक रूकने का नाम नहीं ले रही है, हर रोज मन्दिरों व मस्जिदों को लेकर देश में दंगे फसाद होते है, आखिर कब तक हिन्दू–मुस्मिल एक–दूसरे का खून बहाते रहेगे ? रहीमउद्दीन बार–बार अपने निजाम को याद करके रोता रहता है, वे अल्लाह से दुआ करते है कि उनके दिल का टुकड़ा लौट आये। रहीमउद्दीन कहता है।

''नन्हे काहे बस गयो सिन्ध जाय के और हमको
रूसवा कर दियो भैया ? लौट आओ ....। लौट आओ

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

बेटवा .... । तौबा का दरवाजा खुला है।''[5]

अतः हर व्यक्ति हिन्दू–मुसमलमान होने से पहले इंसान है। धर्म किसी भी व्यक्ति को आपस में बैर–भाव करना नहीं सिखाता। इकबाल जो उर्दू के शायर थे और उर्दू पाकिस्तान की भाषा है, हिन्दुस्तान की नहीं, लेकिन यह गलत है, उर्दू दोनों देशों की भाषा है। इसलिए शायर किसी भी मुल्क का नहीं जबान का माना जाता है। लेकिन जबान और मुल्क से बड़ी इन्सानियत और इंसानी भावनाऐं होती है, इसलिए शायर सभी के होते है।

अतः धर्म की आड़ में कब तक बेगुनाह मारे जायेगे ? जुमे की नमाज के दिन गांव के बुजुर्ग ख़ुदा से दुआ करते है –

''अल्लाह पाक। हमवतनों के दिलों से नफरत धो। उसमें हमारी मोहब्बत का बीज बो, या फिर हमें अपने पास बुला ले।''[6]

इस प्रकार 'नासिरा शर्मा' ने अपने उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' में अभिव्यक्त संवेदना के सभी रूपों का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है आज हमें मोहब्बत की भाषा की जरूरत है, ऐसी भाषा की जो दिलों में आपसी दुश्मनी रूपी रेगिस्तान को मिटा दे, जिसमें भीगकर आदमी सिर्फ इन्सान रह जाये। यह मज़हब से उपर उठकर इन्सान को इन्सान के रूप में पहचाने हिन्दू–मुसलमान के रूप में नहीं।

सन्दर्भ सूची

[1] नासिरा शर्मा, जिन्दा मुहावरे, पृ० 30
[2] वही, पृ० 21
[3] वही, पृ० 10
[4] नासिरा शर्मा विशेषांक, पृ० 105
[5] नासिरा शर्मा, जिन्दा मुहावरे, पृ० 26
[6] वही, पृ० 82